Vision Swati Garg

मेरे सपनों का भारत
स्वर्ग से सुंदर भारत

TOTAL SOLUTION

सुन्दर मन, सुन्दर सोच, सुन्दर भारत...

यह राम राज्य के स्थापना की व्यवस्था है

140 करोड़ हिन्दुस्तानियों को सुखी, सम्पन्न,
निरोगी बनाना तथा साथ में
प्रदूषण रहित वातावरण, जल, मिट्टी,
और ध्वनि बनाने का तरीका।
इसके साथ आधुनिक भारत, प्रकृति को समेटे हुए,
परिवार और दोस्तों के बीच खुशी,
उल्लास और उमंग के साथ जीवन व्यतीत करना।
सबका साथ, सबका विकास,
सबका विश्वास, सबका प्रयास।

Library Edition

मेरे सपनों का भारत
स्वर्ग से सुंदर भारत

TOTAL SOLUTION

For

Happy, Healthy,
Prosperous &
Pollution Free India
Also Save the World
From Global Warming

वसुधेव कुटुंबकम

धरती ही परिवार है

One Earth • One Family • One Future

सम्पूर्ण समाधान - एक व्यवस्था

इस लेख की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने के लिए
QR Code स्कैन करें एवं इसे डाउनलोड करें।
पढ़ें समझें और अपने मित्रों से साझा करें।

महामंत्र

ॐ सर्वे भवन्तु सुखिनः। सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु। मा कश्चित् दुःख भाग्भवेत्॥
ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः

English Translation

May all be Prosperous and Happy,
May all be Free from illness,
May all see what is Spiritually Uplifting,
May No One Suffer in Any Way
Om Peace, Peace, Peace

140 करोड़ हिन्दुस्तानियों को सुखी, सम्पन्न,
निरोगी बनाना तथा साथ में
प्रदूषण रहित वातावरण, जल, मिट्टी,
और ध्वनि बनाने का तरीका।
इसके साथ आधुनिक भारत, प्रकृति को समेटे हुए,
परिवार और दोस्तों के बीच खुशी,
उल्लास और उमंग के साथ जीवन व्यतीत करना।
सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास।

उद्देश्य - Objective

- इस लेख का उद्देश्य एक ऐसे शहर की योजना बनाना है, जिसमें कृषि, उद्योग, निवास और वाणिज्यिक (Commercial) गतिविधियों के लिए निर्दिष्ट क्षेत्र शामिल हैं। इस योजना के लिये भारत के कुल क्षेत्रफल का 50 प्रतिशत भूमि से अधिक की आवश्यकता नहीं होगी, जो प्रदान करेगा पूर्ण सुविधाओं और प्रावधानों का जैसा की लेख में वर्णन है।
- लेख से हमारा उद्देश्य है कि अधिक से अधिक लोगों को इस योजना के बारे में पता होना चाहिए और इससे जुड़े और इस पर चर्चा करें।
- स्वप्न की पूर्ति के लिए, उपरोक्त योजना नेतागण, नौकरशाह, मीडिया और उपयुक्त अधिकारियों के संज्ञान में आना चाहिए, जो सोच सकता है, योजना बना सकता है, और काम कर सकता है, इस सपने को हकीकत में बदलने के लिए।
- मीडिया इस विचार को प्रकाशित कर बढ़ावा देने में मदद कर सकता है।
- यदि आप इस लेख से सहमत हैं, कि यह सही दिशा और योजना प्रदान करता है, जीवन जीने के लिए तो कृप्या इस लेख को पढें और इसे अधिक संपर्कों को अग्रेषित करें।
- मुझे आने वाली पीढ़ी को बचाना है। उनका जीवन सरल, सुंदर और आनंदमयी बनाना है।

This Article is all about

140 करोड़ हिन्दुस्तानियों को सुखी, सम्पन्न, निरोगी बनाना तथा साथ में प्रदूषण रहित वातावरण, जल, मिट्टी, और ध्वनि बनाने का तरीका। इसके साथ आधुनिक भारत, प्रकृति को समेटे हुए, परिवार और दोस्तों के बीच खुशी,उल्लास और उमंग के साथ जीवन व्यतीत करना।
सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास, सबका प्रयास।

सम्पूर्ण समाधान
Total Solution

भाग 1

जलवायु परिवर्तन
Climate Change

आपको भगवान शब्द का अर्थ पता है, शायद नहीं!
अगर हम भगवान शब्द का संधि विच्छेद करें तोः-

भ- से भूमि
ग- से गगन
व- से वायु
अ- से अग्नि
न- से नीर (पानी)

इन्हीं पंच तत्वों से इस पृथ्वी नामक रूप का प्राकृतिक अवतार हुआ है, जिसमें हम व लाखों की संख्या में जीव जंतु और जानवर वास करते हैं, हिंदु धर्म की मान्यता के अनुसार सभी 8400000 (84 लाख) योनियों में समाहित होते हैं।

एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें की विशेष अक्ल दी गई है। प्रकृति ने इसको इसलिए अक्ल दी ताकि अपनी स्वयं की रक्षा करें और दूसरों की भी, पर इस मनुष्य रूपी जीवन ने आपस में ही लड़ना चालू कर दिया, तो यह दूसरों कि क्या रक्षा करेगा। अगर हम इसी प्रकार से इन पांच तत्वों का संतुलन नहीं रखेंगे और इनका शोषण करेंगे तो इन तत्वों को जरा भी देर नहीं लगेगी हमारा अस्तित्व मिटाने में, प्रकृति ने बड़ा सोच समझकर निर्णय लिया है की पहले मैं एक जीव को

तो विशेष बुद्धि दे कर देखूँ तो क्या होता है, पर उसे मालूम नहीं था की बुद्धि सफलता की ओर ले जाने के बजाय विनाश की ओर लेकर जाएगी।

प्रकृति के लिए इंसान उतना ही तुच्छ है,जितना इंसान के लिए दूसरे प्राणी।

जलवायु परिवर्तन क्या चीज है- वैज्ञानिकों का कहना है कि इस सदी के अंत तक हमारे धरती का औसतन तापमान 3 से 5 डिग्री सेल्सियस तक बढ़ जाएगा जिसके कारण हमारे उत्तरी ध्रुव तथा दक्षिणी ध्रुव के पास जमा बड़े-बड़े हिमखंड पिघल जाएंगे, उसके फल स्वरूप हमारे समुद्र का जलस्तर एक मीटर तक बढ़ जाएगा, जिससे धरती का बहुत बड़ा हिस्सा समुद्र में विलिन हो जाएगा। समुद्र में जलस्तर बढ़ने से ज्यादा वाष्पीकरण होगा, उसके कारण हवा बहुत तेज चलेगी, तुफान बनेगा और बरसात की अधिकता होगी, जोकि बड़ी-बड़ी बाढ़ और जलमग्न का कारण होगा।

जलवायु परिवर्तन के मुख्य कारण हैं- वनों का कम होना, जीवाश्म ईधन का अत्याधिक प्रयोग, वाहन, उद्योगिकरण, शहरीकरण, ईत्यादी। आज जलवायु परिवर्तन को लेकर दुनिया भर में बड़ी-बड़ी संगोष्ठियाँ आयोजित की जा रहीं हैं। जहां बड़े-बड़े बुद्धिजीव अपना विचार रखते हैं की जलवायु परिवर्तन से कैसे लड़ा जाये। दुर्भाग्य से तरक्की का मतलब बड़ी-बड़ी गाड़ियां, शानदार महल, महंगे कपड़े, ऊँची इमारतें, विशाल हाईवे, भागती दौड़ती शोर करती दुनियां ही रह गया है।

जब मानव ही नहीं रहेगा, तो इन का क्या मतलब

हम भारतीय तो सनातन प्रेमी है, जहां नदियां, पेड़, भूमि, पर्वत, सूर्य की पूजा करते हैं। आज हम उसी को उजाड़ने में लगे हुए हैं।

Help Save The Environment, Use What You Need
Save Today, Enjoy Tomorrow

सम्पूर्ण समाधान
Total Solution
भाग 2
वाहन
Automobiles

आज जब हम महानगर, शहर और गाँव की सड़कों पर निकलते हैं तो चारों तरफ भागते वाहन नजर आते हैं। क्या यह हमारे लिए इतना आवश्यक है कि हम इनके बिना अपने रोजमर्रा के काम नहीं कर सकते। आज जब हम महानगर की बात करें तो घंटों हमें एक जगह से दूसरी जगह जाने में लग जाते हैं। आज इन्हीं वाहनों के कारण हमारे गाँव और कसबे, शहर और महानगर में तब्दील हो गए हैं।

आज सड़कों पर ऐसा लगता है की दुनियां में एक दूसरे से भागने की होड़ लगी है। इतने शोर में जीवन की शांति और सुख समाप्त होता जा रहा है। आज कार्य के लिए घंटों सफर करते हैं। **ऐसा लगता है कि हम जीवन के लिए कार्य नहीं करते, बल्कि कार्य के लिए जीवन जी रहें हैं।** आज इनके कारण प्रदूषण की बहुत बड़ी समस्या खड़ी हो गई है।

पहले हर गाँव अपने आप में एक सम्पूर्ण व्यवस्था थी, हम अपने घर के ही आँगन में रोजमर्रा की सब्जी की जरूरत पूरी कर लेते थे। हर घर में गाय होती थी, जो सब्जी के बचे हुए छिलके खाकर हमें दूध देती थी। जो गोबर करती थी, वो खेतों में खाद के रूप में इस्तेमाल होता था। गाँव का कुम्हार मिट्टी के बर्तन बनाता था। कोहलु से तेल मिल जाता था, और शुद्ध घी तो घर में ही हो जाता था, **तब हम प्रकृति के साथ रहते थे, न कूड़ा न करकट।**

पहले हम शारीरिक श्रम करते थे तो हमारा शरीर स्वस्थ रहता था। आज हम अधिकतर समय टीवी देखने में, व्हाट्सप में अथवा ट्रैफिक में फंसकर व्यतीत कर देते हैं। इसी के कारण समाज जो पहले संयुक्त परिवार में दोस्तों और रिश्तेदारों के बीच रहता था, आज अपनों से दूर चला गया। **पहले हम अपने खेतों के मालिक थे आज हम दूसरों के यहाँ नौकरी करते हैं।**

हमें भगवान द्वारा जो मानवीय जीवन दिया गया है उस जीवन की समझ का फायदा उठाना चाहिए, न की हम अपने ही पैरों में कुल्हारी मार लें, हम सब चाहें तो आधुनिकता के साथ प्रकृति को मिश्रित कर सकते हैं।

लगभग 1 लाख से ज्यादा व्यक्ति हर साल सड़क दुर्घटना में मारे जाते हैं। क्या वाहन इतने जरूरी हैं कि इनके कारण हर साल 1 लाख लोगों की बलि दी जाती है, क्या आज से 100 साल पहले वाहन थे, तब क्या हमारा गुजारा नहीं चलता था। मैं तरक्की के खिलाफ नहीं, पर आज जिस घर में दुर्घटना के कारण कोई मृत्यु को प्राप्त हुआ है तो हमें जाकर उनसे पूछना चाहिए, क्या वाहन इतना जरूरी था।

दिल्ली जैसा महानगर जहां मैं रहता हूँ, ऐसा लगता है कि मायाजाल के चक्रव्यूह में फंसकर रह गया हूँ। सुबह हम जब मॉर्निंग वॉक पर जाते हैं तो दिल्ली की सड़कों पर गाड़ियों का ऐसा रेला कि हम चाह कर भी सड़क पार नहीं कर सकते, साईकिल चलाने वाला तो अपने आपको बचाकर चलता है व पैदल चलने वालों के लिए पटरी बची ही नहीं है, कोई अनहोनी होने का डर हमेशा बना रहता है।

ट्रैफिक की व्यवस्था, पार्किंग की व्यवस्था, लोगों को सड़क पर चलने की व्यवस्था, ओवर ब्रिज, अंडर ब्रिज, फ्लाईओवर, **ऐसे जैसे की जिंदगी गाड़ी का**

पहिया हो गई, भागम भाग बस भागम भाग

आज सारी सरकारें गाड़ियों के चलने की व्यवस्था के लिए उपाय कर रहीं हैं, लेकिन पैदल चलने व साईकिल पर चलने वालों की कोई परवाह नहीं है, बड़े-बड़े हाईवे जहां पर गाड़ियां फर्राटे से दौड़ती हैं, पैदल चलने वालों को यदि सड़क पार भी करनी हो तो नहीं कर सकते। **ऐसा न हो कि आधुनिकता वरदान की जगह अभिश्राप हो जाए।** स्वास्थ्य से ज्यादा गाड़ियों पर ध्यान दिया जाता है।

एक गाड़ी में घूम रहा है तो दूसरा टूव्हीलर पर, जो की मजबूर है गाड़ीयों की प्रदूषित हवा खाने के लिए। पैदल चलने वाले लोग जो प्रदूषण नहीं फैला रहे, उनको प्रदूषित हवा का सेवन करना पड़ रहा हैं, उनकी गलती क्या है, उनको किस बात की सजा मिल रही है। इसी वजह से आज महानगरों मे लोग अपने **बच्चों को दूर किसी महाविद्यालय में भर्ती करते हैं** जहां का वातावरण शुद्ध हो।

शांति से जीने वाला प्राणी,
आज मनुष्य ने इतनी हाय तौबा क्यों कर ली,
इससे हमें किस चीज की प्राप्ति होगी, पता नहीं।

सम्पूर्ण समाधान
Total Solution

भाग 3

ओद्योगिकरण
Industrialisation

आज हम हिंदुस्तान के संदर्भ में देखते हैं तो हम लोगों ने काम को केंद्रित कर दिया है, वहीं ब्रांडेड उत्पाद दिल्ली जैसे शहर का उदाहरण दूंगा तो हर 4 से 5 किलोमीटर पर वह ब्रांड उपलब्ध है। पहले ब्रांड स्थानीय क्षेत्रफल में उपलब्ध था, फिर जैसे-जैसे संसाधन बढ़े वह ब्रांड दूसरी एरिया में फैलता गया और संसाधन बढ़े तो वह ब्रांड और ज्यादा फैलता गया इससे धीरे-धीरे जो वहां के स्थानीय उत्पादक हैं उनकी रोजगारी में दिक्कत आई, अब इससे आगे और एक नुकसान हुआ कि जो काम पहले मैनुअल होता था, वह धीरे-धीरे सेमी आटोमेटिक, फिर फुली आटोमेटिक और अब तो संसार ही कंप्यूटर कंट्रोल पर जा रहा है। इससे हम बेरोजगारी और अवसाद वाद (Depression) को जन्म दे रहें हैं।

पहले जहां लोग प्रोडक्शन में व्यस्त थे आज वही लोग मार्केटिंग में ट्रांसफर हो गए।

मार्केटिंग में क्या हुआ- व्यक्ति एक शहर से दूसरे शहर, दूसरे शहर से तीसरे शहर, ऐसे कर कर के उसका महीना निकल जाता है। अब उसे वहां रहने के लिए होटल चाहिए, वहां जैसा तैसा भोजन मिला वो खा लिया, अकेलापन दूर करने के लिए नशे का सहारा लेता है और हाँ किसी व्यक्ति में कामवासना की ज्यादा भूख हुई तो उसका भी प्रबन्ध कर लिया। यह यहाँ तक ही सीमित

नहीं है, बड़ी-बड़ी व्यापारिक संस्थाएं और बैंकिंग सेक्टर भी हर 2 से 3 वर्ष के पश्चात अपने सीनियर अधिकारियों का तबादला करती रहती हैं, जिसके कारण उसे अपने परिवार को वहीं छोड़ना पड़ता है या अपने साथ ले जाना पड़ता है, और सारी व्यवस्थाएं पुन: करनी पड़ती हैं।

अब क्या हो रहा है कि कुछ ही उद्योगपति फल फूल रहे हैं, चाहे वो कपड़े, जूते, सौंदर्य प्रसाधन का व्यापार, या इलेक्ट्रोनिक्स और गाड़ियों का व्यापार हो। **अब तो बड़े - बड़े डिपार्टमेंट स्टोर खुल रहे हैं, जिसके कारण छोटे-छोटे व्यापारियों के लिए बड़ी परेशानी खड़ी कर दी है।** Electronics और Automobiles के उद्योगों में काफी हद तक विदेशी कम्पनियों का वर्चस्व है। **भारत इतना बड़ा देश, इतनी यहाँ की आबादी, प्राकृतिक संसाधनों से भरपूर, फिर हमें किसकी जरूरत।**

विकास का मतलब है कि जीवन को आसान और खुशहाल बनाना, ना कि तनाव पूर्ण।

पहले लोग एक एक हफ्ता होली जैसे त्यौहारों को मनाया करते थे, एक एक हफ्ते के लिए शादी का प्रोग्राम होता था, लोगों के पास समय ही समय था।

आजकल लोग बिना काम के व्यस्त हो गए।

सम्पूर्ण समाधान - एक व्यवस्था

इस लेख की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने के लिए QR Code स्कैन करें एवं इसे डाउनलोड करें। पढ़ें, समझें और अपने मित्रों से साझा करें।

सम्पूर्ण समाधान
Total Solution

भाग 4

शहरीकरण
Migration

अभी क्या हो रहा है, दिल्ली वाले NCR में काम करने के लिए जाते हैं और NCR से लोग दिल्ली में काम करने के लिए आ रहे हैं, लोगों की आवाजाही बनी हुई है। बड़ी बड़ी गाड़ियां, आलीशान फ्लैट्स, पति पत्नी दोनों मल्टीनेशनल में काम करते हुए, शायद कहीं पत्नी दिन में तो पति रात में, बच्चे या तो दूर किसी बड़े हॉस्टल में हैं या किसी निजी स्कूल में, घर में बच्चा है तो कोई घरेलु सहायक या सहायिका के सहारे, जो की अपने परिवार की जरूरत पूरी करने के लिए, ऐसे हजारों परिवारों के यहां नौकरी करती है।

सम्पन्न व्यक्ति, दिल्ली जैसे शहर में रहते हैं और यहां से 25 से 50 किलोमीटर दूर अपने लिए गाय पालते हैं और अपने लिए जैविक खेती को उगाते हैं। उसके लाने ले जाने का खर्चा व पोलूशन आदि अलग से।

एक किसान का बेटा जो अपने खेत का मालिक है, आज दिल्ली जैसे शहर में किसी **छोटी सी दुकान पर काम करता है,** वहां पर झाड़ू पोछा, साफ सफाई इत्यादि करता है, **वो बेटा गांव में अपने घर में दूध दही और घी खा रहा था, आज वह रूखी सूखी रोटी खाकर अपना जीवन व्यतीत कर रहा है** और रात होने पर किसी छोटे से कमरे में जा कर सो जाता है कि कुछ पैसों के लिए शायद उनका कुछ भला हो जाए।

उसको पता ही नहीं लगा की कब वो इतना बड़ा हो गया की वो अपने घर की जिम्मेदारी समझने लगा।

शहर में रहने वालों का घिनोना सच

आजकल के जीवन की सबसे बड़ी समस्या है की बेटा और बहू शहर में रहते हैं। माँ और बाप गांव में रहते हैं और बच्चे भी जो थोड़े बड़े हो जाते हैं तो काम के सिलसिले में बाहर चले जाते हैं, ऐसे में क्या होता है कभी भी किसी की तबीयत खराब होने पर उनको कोई देखने वाला नहीं होता। **सब एक-दूसरे बिना अधूरे हैं।**

जहां सभी जानवर दिन में काम करते हैं और रात्रि को विश्राम, वहीं इंसान आजकल काफी बड़ी संख्या में रात को काम करता है जिससे कि उसके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ता है। पहले समस्या बहुत बड़ी थी, पर अब इसने एक विकराल रूप धारण कर लिया है।

हम जब शारीरिक श्रम नहीं करते हैं तो हमारा ब्लड का सरकुलेशन शरीर में प्रॉपर नहीं होता जिसके कारण हमारा दिमाग ढ़ंग से काम नहीं करता उसी कारण हमारे शरीर में नेगेटिव थॉट्स डिप्रेशन जैसी बीमारियां आ जाती हैं।

संतुलन ही सबसे बड़ी व्यवस्था है,
यही देश की प्रगति है और खुशहाली भी

शहरों में प्रदूषण कम करने के कुछ आसान उपाय:

1. बच्चों के स्कूल 2 किलोमीटर तक सीमित कर देना चाहिए।
उद्योग और ऑफिस में करम करने वालों का घर अधिकतम 10 किलोमीटर से दूर नहीं होना चाहिए।
2. पूरे देश में वाहनों के जाम को लेकर ओड और इवन की व्यवस्था समय समय पर होनी चाहिए।
3. स्कूल का समय सुबह 8:00 से 4:00 ऑफिस का समय सुबह 9:00 से 5:00 दुकानों और मार्किटों का समय दिन 12:00 से 8:00 बजे तक होना चाहिए।
4. हर संस्था जहां ज्यादा व्यक्ति काम करते हो, वहाँ भोजन की व्यवस्था उस संस्था की नैतिक जिम्मेदारी होनी चाहिए।

बढ़िया बंगला बना लो, अच्छे-अच्छे कपड़े पहन लो, बड़े बड़े हॉस्पिटल बना लो, पर जब शरीर ही स्वस्थ नहीं रहेगा तो इनका क्या फायदा। पहले हम सुबह से शाम तक शारीरिक श्रम करके शरीर को थका देते थे, जिससे रात को अच्छी नींद आती थी, **आज हम दिमाग को थकाने में लगे हैं।** जो की स्वास्थ्य व जीवन के लिए हानिकारक है।

सम्पूर्ण समाधान - एक व्यवस्था

इस लेख की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने के लिए
QR Code स्कैन करें एवं इसे डाउनलोड करें।
पढ़ें, समझें और अपने मित्रों से साझा करें।

सम्पूर्ण समाधान
Total Solution
भाग 5
निवारण
Redressal

हर दिन बढ़ते वाहन, रेंगती गाड़ियां और बढ़ता प्रदूषण, कारणवश जलवायु परिवर्तन, बढ़ती बीमारी व अन्य समस्याएं और फिर खोजते रहो इनको दूर करने के उपाय। शायद यह एक दिन भयानक त्रासदी का कारण होगी।

पहले जहां इंसान गांव के खुले वातावरण में रहते थे, आज वहीं पर करोड़ों के समूह में शहरों में रहते हैं, यह भी एक बड़ा कारण है संक्रमण और बीमारी के फैलने का।

हमारा स्वर्ग से सुंदर सपनों का भारत कैसा हो
हमारे जैसे घनी आबादी वाले देश में

मेरा विचार! शहरों का क्षेत्रफल 25 वर्ग किलामीटर तक सीमित हो, इसके बाद हर 25 वर्ग किलोमीटर तक खेती या हरियाली हो, जैसे की शतरंज के खेल में। ऐसे हर शहर में रहने, स्कूल, खेती व उद्योग की व्यवस्था हो, जो लोगों को पर्याप्त रोजगार, सुखी व सम्पूर्ण जीवन दे सके। **इससे हमें रोज के लिए वाहन की जरूरत भी नहीं रहेगी।** जब हम अपने लिए खेती करेंगे तो कीटनाशक और रासायनिक खाद का उपयोग भी नहीं करेंगे जो कि कैंसर जैसी बड़ी महामारी का कारण है।

सड़कों पर चल नहीं सकते क्योंकि प्रदूषण है साईकिल चला नहीं सकते क्योंकि खतरा है, आज साईकिल, दुपहिया वाहन और पैदल चलने वाले ही सबसे ज्यादा सड़क दुर्घटना के शिकार होते हैं जिससे भी हमें मुक्ति मिलेगी।

आज दिल्ली, मुंबई, चेन्नई जैसे महानगर में हम दूध फल-सब्जी 100 किलोमीटर दूर से आता हैं फिर उसके निपटाने के लिए वापिस 100 किलामीटर छोड़ कर आते हैं, ऐसा ही हम

पानी की सप्लाई को लेते हैं फिर उसकी निकासी का प्रबंध करते हैं।

इस व्यवस्था से शहरों में जमीन के दाम कम होंगे और गांव में बढेंगे। इससे भारतवर्ष में जमीनों के दाम एक से रहेंगे और हर व्यक्ति को हर प्रकार की सुविधा मिलेगी। इससे **अमीरी और गरीबी का फासला भी कम होगा, साथ में व्यक्ति जो गांव से पलायन कर रहा है,** अपने परिवार और दोस्तों के बीच रहते हुए, हंसी-खुशी का जीवन जियेंगे।

जीवन की सबसे बड़ी मस्ती क्या है?

मेरे विचार से जीवन की सबसे बड़ी मस्ती परिवार और दोस्तो में मजाक हंसी खुशी और बात करना ही जीवन की सबसे बड़ी मस्ती है। **आज हम ऊर्जा का अत्यधिक दोहन कर रहे हैं, पहले हम ज्यादा प्रदूषण बढ़ाते हैं फिर उसको नियंत्रण करने के उपाय खोजते हैं,** इस व्यवस्था से सड़कें कम होगी, पेड़ों की कटाई कम होगी, वातावरण स्वच्छ रहेगा और सबसे बड़ी बात कि हम संसार में कार्बन के उत्सर्जन को कम कर सकेंगे। सभी प्रकार के प्रदूषण में भारी कटौती होगी, जब हम स्वस्थ रहेंगे जो हमें अस्पताल की भी कम जरूरत होगी। **आज इसी प्रदूषित वातावरण के कारण हमारा शरीर निढाल और गिरा गिरा रहता है।**

सबसे बड़ा प्रश्न मन में उठता है कि हम इससे रोजगार को कम कर देंगे।

देखिए दोस्तों! प्रकृति ने इतने जानवर बनाए हैं, उसमें सिर्फ एक मनुष्य को ही बुद्धिजीवी बनाया है, बाकी हर प्राणी भोजन करता है जो की प्रकृति ने भरपूर दिया है, और समागम जिससे कि उसका वंश चलता रहे, बाकी समय वह बैठ कर ऊंघता है या आलस्य फैलाता है, पर हमारे पास तो बहुत काम है! जैसे खेती, भोजन बनाना, कपड़े धोना इत्यादि। इसके अलावा मकान और आजकल के आधुनिक उपकरण।

जब हम संयुक्त परिवार में रहेंगे तो दादा दादी का समय पोते पोतियों से खेलते हुए, ग्रहणी का ग्रह कार्य से और आदमी का जरूरत का सामान इकट्ठा करने में व्यतीत होगा। इसमें सबसे जरूरी है कि हम अपने उद्योग को जरूरत से ज्यादा ऑटोमेशन न करें, जिससे रोजगार के अवसर ज्यादा होंगे और उसके बाद भी समय है तो खेलों में, परिवार और दोस्तों से गप लगाने में और शारीरिक कसरत में उपयोग करें। समय बचे तो संकीर्तन और ऊपर वाले की पूजा करने में। साथ में **इंसान संयुक्त परिवार में रहता है तो वो जल्दी से गलत राह में नहीं पड़ता है।**

सारांश
Summary

स्वर्ग से सुंदर सपनों का शहर 25 वर्ग किलोमीटर तक सीमित हो, जहां रहने की, स्कूल की, उद्योग की, अस्पताल की और अन्य जरूरी सेवाओं की उपलब्धता हो। इसके बाद हर 25 वर्ग किलोमीटर तक खेती और हरियाली हो। कुछ ऐसा जैसे शतरंज के खेल में (A complete self reliant city)

- निजी वाहन का उपयोग कम से कम हो।
- संतुलन ही सबसे बड़ी व्यवस्था है।
- आज के लिए सरकार की सबसे बड़ी जिम्मेदारी, सामाजिक व्यवस्था को चुस्त और तंदुरूस्त रखना।
- जब हम संयुक्त परिवार में दादा दादी और भाइयों के साथ रहते हैं तो आपकी सोच-समझने और निर्णय लेने की क्षमता बढ़ जाती है।
- पृथ्वी और मानवता को बचाने के लिए यही एक उपाय लगता है, यह उपाय सिर्फ हिंदुस्तान के लिए नहीं बल्कि पूरे विश्व के लिए जरूरी है।
- आप सुखी हैं तो इसका मतलब यह नहीं कि सारे हिंदुस्तानी सुखी हैं, पर 140 करोड़ हिंदुस्तानी सुखी है तो आप भी सुखी हैं।

सम्पूर्ण समाधान - एक व्यवस्था

इस लेख की डिजिटल कॉपी प्राप्त करने के लिए QR Code स्कैन करें एवं इसे डाउनलोड करें। पढ़ें, समझें और अपने मित्रों से साझा करें।

कुछ जरूरी बातें

- बेरोजगार, वरिष्ठ नागरिक, अपंग और उन पर आश्रित व्यक्तियों के लिए न्युनतम पेंशन स्कीम होनी चाहिए जो मेरे हिसाब से न्यूनतम रूपये 2000-3000 प्रति माह प्रति व्यक्ति गांव में और रूपये 3000-4000 प्रति माह शहरों में सरकार को देने चाहिए जीवनयापन के लिए।
- हर एक व्यक्ति सुबह का नाश्ता घर से करके जाए और रात्रि का भोजन घर पर ही कर ले।
- मुफ्त शिक्षा और साथ में विद्यालयों में योग, प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद का अध्ययन कराना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त जीवनयापन के लिए बिजली, पानी, स्वास्थ्य व जीवन की न्यूनतम मूल सुविधाएं मुफ्त होनी चाहिए। ऐसा करने से इन परिवारों में अगले दिन का डर खत्म होगा व खुशहाल उठ सकेंगे। जिस कारण उनके रहन सहन में पॉजीटीवीटी का वातावरण रहेगा और क्राईम भी कम होगा।
- शारीरिक श्रम इंसान की जरूरत नहीं मजबूरी होनी चाहिए। जब शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी खुशहाल रहेगा।
- हमें आबादी को कम करने के लिए कानून बनाना चाहिए।
- कोई भी परिवार देश भर में एक मकान से ज्यादा नहीं खरीद सकता।
- घर में Housewife होना चाहिए, या फिर House-Husband.
- कोई भी आद्यौगिक, व्यवसाय, खेती अथवा रिहायशी जगह 1 साल से ज्यादा खाली है या उपयोग में नहीं लाई जाती है तो उस पर दोगुना हाउस टैक्स लगना चाहिए।

सोचें-विचारें...........

स्वर्ग से सुंदर सपनों का भारत

नोट: लेख को अच्छी तरह समझने के लिए 3-4 बार पढ़ने की कोशिश करें।

मेरे विचार से सरकार को हर राज्य में 2 से 3 जगह 15×15 km का क्षेत्रफल चिन्हित करना चाहिए और लेख के अनुसार दिए गए विचार का अनुसरण करना चाहिए, और एक परियोजना के रूप में काम करना चाहिए, अगर यह परियोजना सफल हो जाती है तो पूरे भारतवर्ष में इस पर अमल करना चाहिए।

	<--------- 15 KM ----------->			
5 km	Farming	City	Farming	5 km
5 km	City	FOREST	City	5 km
5 km	Farming	City	Farming	5 km
	<--------- 15 KM ----------->			

गांवो का महत्वपूर्ण योगदान इस परियोजना के अमल करने में हो सकता है, जहां कई गांवों का समूह एक भूमि बैंक का गठन करके, परियोजना के लिए आवश्यक भूमि को उपलब्ध कराए और सफलता के लिए विभिन्न साधनों द्वारा व्यक्तिगत सहयोग भी प्रदान करे।

जब यह भूमि बैंक एक नगर के रूप में परिवर्तित होता है, तो उसके मुख्य लाभार्थी वहीं गांववाले होंगे, जिन्होंने इसके निर्माण में योगदान किया है।

नोटः लेख को अच्छी तरह समझने के लिए 3-4 बार पढ़ने की कोशिश करें।

LAYOUT OF TOTAL SOLUTION MODEL CITY

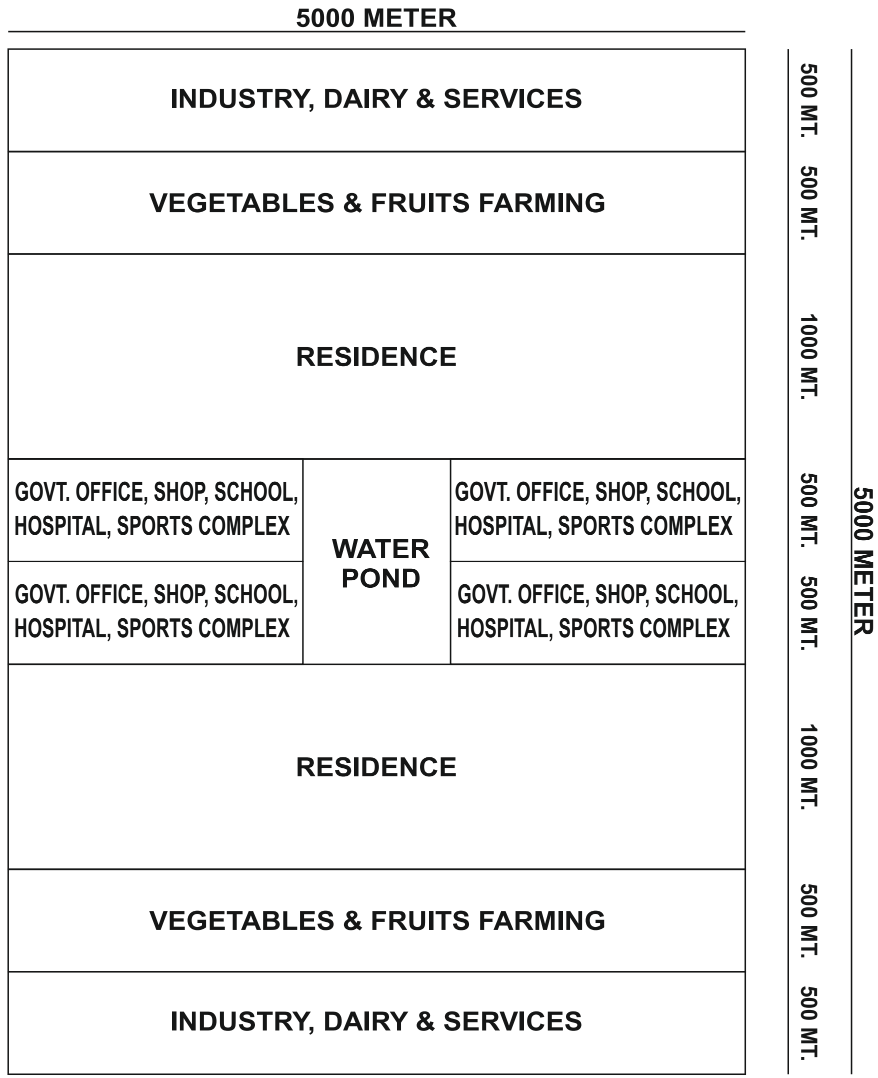

Option 1

Calculation for area required for person to Live and Farming

.	Area Per City	5 x 5	sq km	25 sq km		
	Area For Agriculture	5 x 5	sq km	25 sq km		
	Living Area in City	5 x 1 x 2	sq km	10 sq km	10 x 1000 x 1000	mtr
				1 crore	1,00,00,000	sq mtr
	Area Require For a Person to Live				50	sq mtr
	Total No of Person Can Live			2 Lac	2,00,000	persons
	Considering 50%			1 Lac	1,00,000	persons
a	Area of India		32,87,000	sq km		
b	Population of India **(140 crore)**		140,00,00,000	persons		
c	Population Per City		1,00,000	1 Lac		
d	Area Per City + Agriculture	25 + 25	50	sq km		
e	Total No of City Required	b/c	14,000			
f	Total Area Required For City	d x e	7,00,000	sq km	21.30	percent
g	Area of India Balance	a - f	25,87,000	sq km	78.70	percent
	Notes: Above balance area for Forest, Rivers, Mountains, Dessert Etc.					
h			32,87,000		100	

Option 2

Calculation for area required for person to Live and Farming

.	Area Per City	5 x 5	sq km	25 sq km		
	Area For Agriculture	5 x 5	sq km	25 sq km		
	Living Area in City	5 x 1 x 2	sq km	10 sq km	10 x 1000 x 1000	mtr
				1 crore	1,00,00,000	sq mtr
	Area Require For a Person to Live				50	sq mtr
	Total No of Person Can Live			2 Lac	2,00,000	persons
	Considering 25%			50k	50,000	persons
a	Area of India		32,87,000	sq km		
b	Population of India **(140 crore)**		140,00,00,000	persons		
c	Population Per City		50,000	50k		
d	Area Per City + Agriculture	25 + 25	50	sq km		
e	Total No of City Required	b/c	28,000			
f	Total Area Required For City	d x e	14,00,000	sq km	42.6	percent
g	Area of India Balance	a - f	18,87,000	sq km	57.4	percent
	Notes: Above balance area for Forest, Rivers, Mountains, Dessert Etc.					
h			32,87,000		100	

सामान्य प्रश्न FAQ

प्रश्न 1. इस दस्तावेज में उल्लिखित का मुख्य उद्देश्य क्या है ?

उत्तर इसका मुख्य उद्देश्य ऐसे शहरों की योजना बनाना है जिसमें कृषि, उद्योग, निवास और वाणिज्यिक गतिविधियों के लिए निर्दिष्ट क्षेत्र शामिल हैं। जो प्रदान करेगा पूर्ण सुविधाओं और प्रावधानों का जैसा की लेख में वर्णन है। पृष्ठ संख्या 2 देखें

प्रश्न 2. चित्र में दिखाए गए 15 x 15 किमी खंडों का महत्व क्या है ? इस समाधान में खेती और शहरी विकास को प्रस्तावित क्षेत्र में कैसे जोड़ा गया है ? इस विशेष तरीके से शहर और खेती के क्षेत्रों को मिलाने के मुख्य लाभ क्या हैं ?

उत्तर 15 x 15 किलोमीटर का जो खंड है उसमें हमने चार शहर और उसके साथ लगते हुए पांच खेती की जगह दिखाई है, जिसके कारण खेती के लिए हमें कहीं दूर जाना नहीं पड़ेगा। पृष्ठ संख्या 17 देखें।

प्रश्न 3. क्या इस योजना में पर्यावरणीय से संबंधित कारकों को ध्यान में रखा गया है ? प्रस्तावित 15 x 15 कि.मी. क्षेत्र में खेती और शहर के खंडों में परिवहन कैसे प्रबंधित किया जाएगा ?

उत्तर जब हमें सारी सुविधाएं अपने पांच किलोमीटर के दायरे में मिलने लगेंगी तो हमें उसको प्राप्त करने के लिए बहुत ज्यादा दूर नहीं जाना पड़ेगा। यहां पर वाहन की न्यूनतम जरूरत पड़ेगी, जिसके कारण पर्यावरण को कम नुकसान पहुंचेगा।

प्रश्न 4. खेती और शहरी क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से समर्थन देने के लिए किस तरह के बुनियादी ढ़ांचे की आवश्यकता होगी ?

उत्तर भारतवर्ष की पूर्ण भूमि इस बुनियादी ढांचे को पूर्ण करने के लिए सक्षम है।

प्रश्न 5. क्या इस मॉडल को अन्य क्षेत्रों में लागू किया जा सकता है ? यदि हां तो भौगोलिक या जलवायु परिस्थितियों के अनुसार कौन से बदलाव आवश्यक होंगे ? क्या इस मॉडल का विस्तार किया जा सकता है, यदि हां तो इस अवधारणा को कितने बड़े स्तर पर फैलाया जा सकता है ?

उत्तर यह मॉडल पूरे विश्व भर में लागू किया जा सकता है। पृष्ठ संख्या 15 देखें

प्रश्न 6. इस समाधान को लागू करने से जुड़े संभावित चुनौतियाँ या जोखिम क्या हो सकते हैं ?

उत्तर इस समाधान को लागू करने के लिए हमें बड़ी मात्रा में इसका प्रचार और प्रसार करना पड़ेगा, जिसके कारण हर व्यक्ति समझ सकता है, कि यह हमारे अच्छे के लिए है। ऐसी धारणा आने के बाद इसको आसानी से लागू किया जा सकता है। इसमें सरकार की सबसे महत्वपूर्ण भागीदारी रहेगी। इस समाधान को लागू करने में जोखिम कुछ नहीं, चुनौती लोगों को जागरूक करना है। पृष्ठ संख्या 2 देखें

प्रश्न 7. इस समाधान का स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं और समुदायों पर, विशेष रूप से खेती और शहरी क्षेत्रों में क्या प्रभाव होगा ?

उत्तर इस व्यवस्था से हर व्यक्ति को हर प्रकार की सुविधा मिलेगी। इससे अमीरी और गरीबी का फासला भी कम होगा, साथ में जो व्यक्ति गांव से पलायन कर रहा है अपने परिवार और मित्रों के बीच रहते हुए, हंसी-खुशी का जीवन जियेंगे। पृष्ठ संख्या 14 देखें।

प्रश्न 8. इस योजना में कौन-कौन सी तकनीकी नवाचार या स्मार्ट समाधान जोड़े

गए हैं ?

उत्तर आजकल की सभी आधुनिक सुख सुविधाएँ।

प्रश्न 9. इस सम्पूर्ण समाधान को प्रभावी ढ़ंग से लागू करने के लिए मुख्य हितधारक या साझेदार कौन होंगे ?

उत्तर प्रभावी ढंग से लागू करने के लिए, उपरोक्त योजना नेतागण, नौकरशाह, मीडिया और उपयुक्त अधिकारियों के संज्ञान में आना चाहिए, जो सोच सकता है, योजना बना सकता है, और काम कर सकता है, इस सपने को हकिकत में बदलने के लिए।

प्रश्न10. यह समाधान आवास, उद्योग, व्यावसायिक, खाद्य उत्पादन और रोजगार की आवश्यकताओं को एक साथ कैसे पूरा करता है ?

उत्तर आवास, उद्योग, व्यावसायिक, खाद्य उत्पादन के लिए Annexure A देखें एवं रोजगार के लिए Annexure B देखें।

प्रश्न 11. दुनिया की सबसी बड़ी व्यवस्था क्या है ?

उत्तर संतुलन ही दुनिया की सबसी बड़ी व्यवस्था है।

प्रश्न 12. दुनिया में सबसे बड़ा कौन है ?

उत्तर प्रकृति ही दुनिया में सबसे बड़ी है।

प्रश्न 13. दुनिया में सबसे बड़ा सुख ?

उत्तर परिवार होने का सुख

प्रश्न14. दुनिया का सबसे बड़ा पाप क्या है ?

उत्तर प्रकृति का शोषण करना ही दुनिया का सबसे बड़ा पाप है।

Q 15. What is the biggest solution to stop pollution

Ans. Not to create pollution.

Annexure A

Description	Area In mtr	Area In mtr		Area In Sq mtr	Area In Sq mtr	City Where 1 Lakh People lives	City Where 50 thousand People lives
For :							
Residence	5000	1000	2	1,00,00,000	1 Crore	100	200
Commercial	5000	500	2	50,00,000	50 Lakh	50	100
Industry & Services	5000	500	2	50,00,000	50 Lakh	50	100
Fruit & Vegetable FarmingIn City	5000	500	2	50,00,000	50 Lakh	50	100
Farming Near by the City	5000	5000	1	2,50,00,000	2.5 Crore	250	500
Total Area for each individual						500	1000
Less 25% for common Utilities						125	250
Balance						375	750

Annexure B

Calculation for 50,000 Person

If we consider a family of 6 member			**Job Requirement**		
Children	2	Studying	NA		
Father	1	Job	8333		
Mother	1	Housewife	NA		
Grand Father	1	Job	8333		
Grand Mother	1	Housewife	NA		
		Total Jobs	16667		

Working of Man days per year per person = 250 days						
Description	Qty required Per person per year (B)	No of Person (C)	Total Quantity (D)	Output Per Person In a Day (E)	Total No. of Mandays (F)	No. of Person Employee (G)
			B x C		D / E	F / 250
Cloth Require	10	50,000	5,00,000	10	50,000	200
Hair Cut	12	50,000	6,00,000	15	40,000	160
Restaurant Visit	52	50,000	26,00,000	10	2,60,000	1040
Student			15000			600
Farming in Acre			6000			12000

Milk require per year	400gm x 50,000 x 365		73,00,000			
Milk per cattle	6 liter x 210 days		1260			
No. of Cattle require			5794			580
Plumber						200
Carpenter						200
Electrician						200
Raj Mistry						200
Pottery Maker						200
Doctors	Per City					200
Indian Defence	Per City					50
Type of Industry						
Weaving						
Stationery						
Electrical (Light, Fan, Motor)						
Electronic (TV, Fridge, washing machine, Mixer, Press)						
Gadgets (Mobile etc.)						
Transportation						
					Total	15780

इस व्यवस्था प्रणाली के लाभ

The benefits of Systematic Planning

- यह योजना अवसाद, चिंता और अकेलेपन की सबसे आम समस्याओं को रोकने में फायदेमंद होगी।
- दूसरा प्रमुख कारण है जीवन में करियर प्रतिस्पर्धा के कारण शादी न करना या देर से शादी करना, जिसका समाधान भी हो जाएगा।
- इस प्रणाली से हम प्राकृतिक आपदाओं, आग आदि से काफी हद तक बच जाऐंगे।
- इस व्यवस्था प्रणाली से बेरोजगारी की समस्या स्वत: दूर हो जाऐगी।
- सारी सृष्टि ऑटोमोड पर चलती है, पर इंसान है जो ऑटोमोड पर नहीं चलता, यही तरीका है इंसानों को ऑटोमोड पर चलाने का।
- अपराध जैसे शब्द हमें हिंदी शब्दकोश से हटाना पड़ेगा।
- असमय होने वाली 75 % मौतों को इस व्यवस्था से बचाया जा सकता है।
- इंसानों का इंसानों के प्रति क्रूरता से भी हमें आजादी मिलेगी, साथ में इंसान मानवता और शाहकार की तरफ आगे बढ़ेगा ।
- इंसानों की अपेक्षा और देशो की अपेक्षा ऐसी है, जैसे की मृगतृष्णा जो खत्म होती ही नहीं। यह व्यवस्था कैटालिस्ट (Catalyst) है, अपेक्षाओं को कंट्रोल करने के लिए और दुनियां में शांति स्थापित करने के लिए।

सम्पूर्ण समाधान-एक व्यवस्था के लिए मैं क्या कर सकता हूँ

What I can do to promote Total Solution

- इस लेख को 2 से 3 बार पढ़ें।
- अपने सुझाव व प्रश्न, पीछे दिए गए इ-मेल द्वारा हमसे साझा करें तथा संदेह दूर करें।
- एक ब्रॉडकास्ट लिस्ट बनाऐं और प्रत्येक छह माह में इस लेख को भेजें।
- इस लेख के बारे में लोगों को बताऐं तथा विचार करें और इसकी पूर्ती के लिए कार्य करें।
- Try to keep hard copy of Total Solution in college library, society library or any other libraries.

॥ प्रार्थना ॥

यदि आपको लगता है कि यह उद्देश्य सही है तो आप भी इसका प्रचार करके प्रकृति और देश की खुशहाली के लिए प्रयत्न कर सकते हैं।

कुछ महत्वपूर्ण बातें

- सही दिशा में की गई मेहनत का अंतिम परिणाम सफलता ही होता है। इसलिए रास्ता सही हो तो पीछे नहीं हटना चाहिए।
- पहले हम अपने और अपनों के लिए काम करते थे। आज हम दूसरों के लिए करते हैं।
- मुझे अपने बच्चों को अच्छा रखना है तो पड़ोस के बच्चे को अच्छा रखना मेरी मजबूरी होगी। अगर मुझे अपने गांव के बच्चों को अच्छा रखना है तो पड़ोस के गांव के बच्चों को अच्छा रखना मेरी मजबूरी होगी।
- पहले हम समस्या खड़ी करते हैं, फिर उसका समाधान ढूंढते हैं। व्यवस्था ऐसी करनी चाहिए की समस्या ही न हो।
- हम समस्याओं के बारे में तो विचार करते हैं, परन्तु समाधान के प्रति कोई विचार नहीं करते। अगर हम समाधान के बारे में बातचीत करें, और लोगों को बताएं, और इस पर काम करें तो 10 साल का समय लगेगा इस व्यवस्था को लागू करने में।
- अगर आप सामर्थ्यवान है और आपका पड़ोसी और रिश्तेदार भूखे हैं तो आपसे बड़ा पापी कोई नहीं हो सकता।

प्रश्न जनता से

- इस लेख को पढ़ने के बाद आपको लगता है कि कोई ऐसी दूसरी व्यवस्था है, जो कि बहुत सरल है,तेज है, और कामयाब है ?
- हम सब सम्पूर्ण समाधान चाहते हैं पर उसके लिए कोई कर्म नहीं करना चाहते।
- आपका कोई सुझाव या प्रश्न है, या इसके प्रति कोई शंका है ? यदि है तो नीचे दी गई ई-मेल पर ई-मेल करें।

totalsolution8800@gmail.com,
swatigarg66440@gmail.com, sanjeev.jain@hotmail.com

यह लेखक के अपने विचार हैं।

काल ज्योतिष निर्णय

पंचांग कैलेंडर

द्वारा प्रकाशित

अगर यह लेख आपको अच्छा लगे तो
इसकी 50 प्रतिलिपि अपने मित्रों व रिश्तेदारों से साझा करें।
अथवा
इस प्रतिलिपि को आप दूसरे को पढ़ने के लिए दें,
कृप्या इसे फाड़े नहीं।

प्रतिलिपि प्राप्त, सुझाव और प्रश्न करने के लिए संपर्क करें

totalsolution8800@gmail.com,
swatigarg66440@gmail.com
sanjeev.jain@hotmail.com

मूल्य
50/- प्रतिलिपि

इसकी डिजिटल कॉपी प्राप्त करने के लिए
QR Code स्कैन करें।

जहां धर्म होता है, वहां पाप नहीं होता है।
जहां परिश्रम होता है, वहां दरिद्रता नही रहती।
जहां जागरूकता होती है, वहां भय नहीं होता।
जहां मौन होता है, वहां कलह नहीं होता।

गरीब जन सेवा समिति, मानव सेवा संगठन,
राष्ट्रीय दलित न्याय परिषद्, वेद प्रचारक मंडल, नई दिल्ली - 5